*Akshardhara Research Journal*
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
**E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III**

**14**

# श्रीलाल शुक्ल कृत 'राग दरबारी' उपन्यास में ग्रामीण आर्थिक चेतना

**डॉ विक्रम सिंह राठौर,**
असिस्टेंट प्रोफेसर

**नवीन नाथ**
(शोध छात्र) हिंदी विभाग,
एम. बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

**शोध सारांश:** किसी भी ग्रामीण चेतना का अध्ययन करें तो उसका अलग दृष्टिकोण रहा है। भारत ग्रामों का देश है, यहां ग्रामीण, आर्थिक, राजनीतिक परंपरा रही है। किसी भी ग्रामीण चेतना का अध्ययन करने से वहां कि भौगोलिक परिस्थितियों को जानना अति आवश्यक है, जो 'राग दरबारी' उपन्यास में देखा गया है।

**मुख्य शब्द:** जाति, वंश, चुनाव, प्रजातंत्र, शिक्षा, इत्यादि।

**प्रस्तावना:**

'राग दरबारी' में ग्रामीण चेतना जैसे—जाति, वंश, चुनाव, प्रजातंत्र, शिक्षा, पदलोलुपता पर बहुभावी प्रभाव दिखाई देता है। ये सभी शिवालगंज गाँव के पास ही नजर आती हैं। इनमें कोई इनकार नहीं कि ये ग्राम स्तर पर अलसायी हुई हैं। ये औरतें थी, कतारबद्ध बैठी हुई थी। यहाँ प्राचीन महिलाओं का रूप—रेखन शिवपालगंज की सड़कों में सेवन कर रही थी: ''थोड़ी देर में ही धुंधलके में सड़क की पत्नी पर दोनों ओर कुछ गठरियाँ—सी रखी हुई नजर आईं। ये औरतें थी, जो कतार बाँधकर बैठी हुई थीं। वे इत्मीनान से बातचीत करती हुई वायुसेवन कर रही थी और लगे हाथ मल—मूल का विसर्जन भी सड़क के नीचे घूरे पटे पड़े थे और उनकी बदबू के बोझ से शाम की हवा किसी गर्भवती की तरह अलसायी हुई सी चल रही थी। कुछ दूरी पर कुत्तों के भूँकने की आवाजें हुई। आँखों के आगे धुएँ के जाले उड़ते हुए नजर आए। इससे इन्कार नहीं हो सकता था कि वे किसी गाँव के पास आ गए थे। यही शिवपालगंज था।''[१]

जाति प्रथा ग्रामीण आर्थिक समाज के लिये दयनित बनी हुई है। श्रीलाल शुक्ल गाँव स्तर पर जाति प्रथा को मिटाने के फरेब में हैं। लंगड़ गाँव में धर्म की लड़ाई लड़ता है। वैद्य जी उसके सहायता करने के पक्षधर नहीं हैं। उसका चेहरा उदास हो जाता है। प्रकट हुआ कि लंगड़ का चरित्र जातीय भेदभाव के रूप उलटने लगा है: ''तब तक लंगड़ दरवाजे पर आ गया। शास्त्रों में शूद्रों के लिये जिस आचरण का विधान है, उसके अनुसार चौखट पर मुर्गी बनकर उसने वैद्य जी को प्रणाम किया। इससे प्रकट हुआ कि हमारे यहाँ आज भी शास्त्र सर्वोपरि है और जाति प्रथा मिटाने की सारी कोशिशें अगर फरेब नहीं हैं, तो रोमाण्टिक कार्रवाइयाँ हैं। लंगड़ ने भीख—जैसी माँगते हुए कहा, ''तो जाता हूँ बापू।''[२]

लंगड़ की गाँव के प्रति अधिक दिलचस्पी रहती है। जब रंगनाथ गाँव के दरवाजे पर चित्रित होता है तो लंगड़ भी उसके ईर्द—गिर्द एकत्रित हुआ। आज भी गाँव स्तर पर यही होता है। गाँव के रास्ते खट—खट ध्वनियों की तरह मिलते हैं। लंगड़ के प्रति रंगनाथ की सात्विक घृणा रही है। सनीचर में भी लंगड़ के प्रति उदम्य ग्राम्यहीनता है। रंगनाथ लंगड़ के बताए हुए कारण से असहमत रहता है। लंगड़ में निम्न वर्ग की ग्रामीण चेतना विकसित हुई है। संबंधित रंगनाथ लंगड़ से कहते हैं: ''लंगड़ हो क्या?'' वह कुछ आगे निकल गया था। आवाज सुनकर वह वहीं रुक गया और पीछे मुड़कर देखते हुये बोला, ''हाँ बापू, लंगड़ ही हूँ।''[३]

गाँव शिवपालगंज में एक तमाशबीन था। वह पंडित राधेलाल को किसी देवता का ईष्ट मानता है। झूठी गवाही ग्राम्य जीवन में सटासट चलती है। तर्क और आस्था का रूप शिवपालगंज में प्रशंसा से हुआ है: ''सनीचर और तमाशबीन में लगभग एक बहस—सी हो गई। सनीचर की राय थी कि राधेलाल बड़ा काइयाँ है और शहर के वकील बड़े भोंदू हैं, तभी वे उसे जिरह में नहीं उखाड़ पाते। उधर तमाशबीन इसे चमत्कार और देवता के इष्ट के रूप में मानने पर तुला था। तर्क और आस्था की लड़ाई हो रही थी और कहने की जरूरत नहीं कि आस्था तर्क को दबाएं दे रही थी।''[४]

छंगामल की ग्रामीण चेतना ठुमरी, दादरा की तरह संगीतमय रही है। वहाँ देहाती मेले की गंदगी का दृश्य रंगनाथ के अनुकूल था। गाँव की लड़कियाँ साड़ी पहनने में कुशाग्र थी। नाक में सोने की नथ देहांत के हिसाब से यह करूणाजन भाव है। देहाती लोग सिनेमा गाने के शौकीन, सब पक्षधर होते हैं। रंगनाथ भाव मुग्ध होकर उस आदमी की बात सुनता है पर कुछ समझ नहीं आता है। देहाती लोगों के बारे में उस आदमी के विचार अनुकरणीय हैं: ''वैसे इनसे टिल्लाना सुनिए, दादश सुनिए, चाहे ठुमरी सुनिए।....अपनी जान निकालकर रख देती हैं।''[५]

कई खबरें ग्रामीण स्तर पर दिन प्रतिदिन सामने आती हैं और उनका नैतिक स्तर गिरते जाता है। बेला एक बदचलन लड़की है। खन्ना मास्टर के दल का एक लड़का बेला को प्रेमपत्र लिखता है। झूठमूठ उसमें रूप्पन बाबू का नाम जोड़ दिया जाता है। इस पत्र में गयादीन के अलावा प्रिंसिपल साहेब ही देख पाते हैं। शायद वह भी इसलिए कि गयादीन रूप्पन बाबू के नैतिक पतन को प्रिंसिपल साहब के साथ जोड़ देते हैं। वह प्रेम पत्र प्रेमपत्र नहीं था, बल्कि उच्चकोटि की कविताओं का संग्रह था। बेला का साहित्य भी बदचलनी का सबूत है। कोशिश रही कि ये चीजें पूर्ववत् बदचलन हो रही थी: ''उसी के दूसरे दिन शिवपालगंज में कई खबरें

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved 

*Akshardhara Research Journal*
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
**E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III**

फैली। एक खबर यह थी कि खन्ना मास्टर के दल के किसी लड़के ने बेला को एक प्रेम पत्र लिखा है और उसमें झूठमूठ रूप्पन का नाम जुड़े दिया है। दूसरी खबर यह थी कि बेला ने रूप्पन को एक प्रेम–पत्र लिखा था, जिसका जबाब रूप्पन ने भेजा था पर वह जवाबी पत्र गयादीन के हाथों पकडा गया और बेइजती से मारा गया है।''[६]

शिवपालगंज का ग्रामीण जीवन वहाँ के स्थानीय लोगों की गंदगी से प्रभावित होता है। वहाँ की मक्खियाँ, मच्छर, घोडे, गधे सूअर आदि बढ़ती हुये नियमित–अनियमित आबादी को प्रभावित करते हैं। इससे गाँव पंचायत पीड़ित होती है। छंगामल का ग्राम जीवन कीचड़ से भरा पूरा बदबूदार, अहा ग्राम्य जीवन भी क्या, वहाँ यही सबक दे रहे थे: ''गाँव के किनारे एक छोटा–सा तालाब था जो बिलकुल अहा ग्राम्य जीवन भी क्या है था। गन्दा कीचड़ से भरा–पूरा बदबूदार बहुत क्षुद्र घोड़े, गधे, कुत्ते, सूअर उसे देखकर आनंदित होते थे। कीड़े–मकोड़े और भुगने मक्खियाँ और मच्छर परिवार नियोजन की उलझनों से उन्मुख वहाँ करोड़ों की संख्या में पनप रहे थे और हमें सबक दे रहे थे कि अगर हम उन्हीं की तरह रहना सीख लें तो देश की बढ़ती हुई आबादी हमारे लिये समस्या नहीं रह जाएगी।... गंदगी की कमी को पूरा करने के लिए दो दर्जन लड़के नियमित रूप से शाम सवेरे और अनियमित रूप से दिन को किसी भी समय पेट के स्वेच्छाचार से पीड़ित होकर तालाब के किनारे आते थे और ठोस, द्रव, गैस तीनों प्रकार के पदार्थ उसे समर्पित करके हल्के वापस लौट जाते थे।''[७]

ग्रामीण क्षेत्रों में भूत–प्रेत का कायम वहाँ के संस्कृति के अनुरूप होता है। शिवपालगंज में पीपल के पेड़ पर बैठा हुआ भूत अंधविश्वास को समर्पित है। यह भूत कभी भी किसी व्यक्ति की चाल शक्ति को रोक देता है, जिससे उसमें हड़पम्प मच जाती है। पंडित राधेलाल की भूत झाड़ने की पद्धति शिवपालगंज के लिये लाजमी सिद्ध हुई है: ''शराब खाने से लगभग सौ गज आगे एक पीपल का पेड़ था जिस पर एक भूत रहता था। भूत काफी पुराना था और आजादी मिलने, जमींदारी टूटने, गाँव सभा कायम होने, कॉलिज खुलने जैसी से सैकड़ों घटनाओं के बावजूद मरा न था। जिन्हें उसके वहाँ होने की खबर थी, वे सूरज डूबने के बाद उधर से नहीं निकलते थे। अगर कभी निकल जाते तो उन्हें तरह–तरह की आवाजें सुनने में आतीं। उन आवाजों से आदमी को बाद में बुखार आने लगता था। बुखार से आदमी ज्यादातर मर जाता था। अगर नहीं मरता तो लोग कहते थे कि पंडित राधेलाल भूत बहुत अच्छा झाड़ते है।''[८]

गाँव की अपेक्षा शहरों में शिक्षा का स्तर उत्तम होता है। ग्रामीण पद्धति वाले स्कूलों में बैठने के लिये कुर्सी तक नहीं होती है, न ही अच्छे डेस्क न ही फैन, जबकि शहरी क्षेत्र के स्कूल में इसकी तुलना में काफी विस्तार होता है। वहाँ छात्रों के लिये सारी सुविधाएं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती हैं। वैद्य जी का हृदय तंत्र इस विचारधारा को लेकर नकारात्मक रहता है। वैद्य जी ग्रामीण शिक्षा पद्धति के बारे में प्रिंसिपल से भरी भर्राई आवाज में कहते हैं: ''इन बालकों की शिक्षा देखिए और एक हमारे ग्रामीण स्कूलों के बालक! कितना अंतर है।''[९]

मदारी, जहन्नुम शिवपालगंज के लिये आश्चर्य साबित होता है। एक आदमी तहमद लपेटे डुगडुगी बजाता हुआ शिवपालगंज गाँव में आता है। उसके साथ एक बंदर और बंदरिया अपने वेशभूषा में स्टेज में चलते हैं। इसकी वजह से प्रिंसिपल साहब को अपनी आवाज ऊँची करनी पड़ती है। तत्पश्चात् गाँव में वार्ता का विरोध होता है। मदारी की तुलना यहाँ डुगडुगी से की गई है, जो भरतनाट्य्म संगीत से नीचे नहीं उतरती है। कुल मिलाकर यही साबित होता है कि: ''मदारी जहन्नुम में जाने के बजाय, वहीं से जोर–जोर से जाने लगा था और उसकी डुगडुगी अब एक नई ताल पर बज रही थी। कुछ दूरी पर कुछ कुत्ते दुम हिलाते, कमर लपलपाते भूँक रहे थे। लड़के घेरा बाँधकर खड़े हो गए थे। दोनों बंदर मदारी के सामने बड़ी गंभीरता से मुँह फुलाकर बैठे हुए थे और लगता था कि ये जब उठेंगे तो भरतनाट्य्म से नीचे नहीं नाचेंगे।''[१०]

**निष्कर्ष:** निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि 'राग दरबारी' पूरा का पूरा उपन्यास गांव पर केंद्रित है। फिर भी इसमें हिंदुस्तानी किस्म का ग्रामीण रिवाज है। वास्तव में 'राग दरबारी' ग्रामीण चेतना का स्तम्भ है। ग्रामीण चेतना का अध्ययन करना ही इस शोधारांश का प्रमुख उद्देश्य है।

**संदर्भ सूची:**

1. राग दरबारी, श्रीलाल शुक्ल, पृ॰ १२
2. वही, पृ॰ ३५
3. वही, पृ॰ ६८
4. वही, पृ॰ ९५
5. वही, पृ॰ १२७
6. वही, पृ॰ १६४–१६५
7. वही, पृ॰ १९९
8. वही, पृ॰ २३०
9. वही, पृ॰ २४८
10. वही, पृ॰ ३३५